# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 9-7-23 | 2 | 1-4 |

# राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व में सामंजस्य जरूरी : कुठियाला

## हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला रहे। उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है। क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच समांजस्य बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है।

प्रो. कुठियाला ने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्यक्तिगत संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला संबोधित करते हुए। ■ पीजारओ

### भारत का इतिहास 20 हजार वर्ष पुराना

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं।

### 1400 ईस्वी तक भारत की जीडीपी सबसे अधिक थी

उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ईस्वी तक भारत की जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है।

### ये रहे उपस्थित

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया जबकि अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र हिसार के अध्यक्ष डा. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल सहित विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद, वैज्ञानिक, शोधार्थी उपस्थित रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 9-7-23 | 4 | 5-6 |

# 'राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी'

एचएयू में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो. बीके कुठियाला। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

## एचएयू के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता पहुंचे प्रो. बीके कुठियाला

हिसार। एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में शनिवार को 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बीके कुठियाला ने कहा कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है।

प्रो. कुठियाला ने कहा कि पहले व्यक्ति की खुद की पहचान, फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन की रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ईवी तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल आदि मौजूद रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 9-7-23 | 3 | 1-2 |

## राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. कुठियाला

### हकृवि मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी आयोजित

हिसार, 8 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहें।

*कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य वक्ता प्रो. बी.के. कुठियाला।*

मुख्य वक्ता प्रो. बी.के. कुठियाला ने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है।

सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे है।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि भूमि | 9.7.23 | 9 | 4-8 |

## हकृवि के सभागार में संगोष्ठी में बोले प्रोफेसर बीके कुठियाला

# सामंजस्य बढ़ाकर अलग पहचान देना क्रमिक विकास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला का कहना है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है। उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। प्रो. बीके कुठियाला एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के तौर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा, तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से दानव प्रवृति की ओर बढकर अपना स्वयं का विनाश करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे, इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरूआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्य अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

हिसार। हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्यक्तिगत संगोष्ठी को संबोधित करते प्रोफेसर बीके कुठियाला। फोटो: हरिभूमि

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 9-7-23 | 2 | 4-6 |

हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी

## व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य होना चाहिए : प्रो. कुठियाला

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला रहे। उन्होंने कहा हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत् व व

मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला संबोधित करते हुए।

मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सच कहूं | 9-7-23 | 5 | 1 |

## हकृवि सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला उपस्थित रहें। मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश शर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद कंसल सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 9-7-23 | 5 | 4-8 |

# राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

## हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

हिसार, 8 जुलाई (वीरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे है। उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। 3 साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ई.वी. तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है। उन्होंने बताया कि क्रांतिकारी भगत सिंह जैसे अनेकों शहीदों ने शहादत को स्वीकार किया और एक इच्छा व्यक्त की थी कि मैं अगला जन्म भी इसी भारत में लूं। ये व्यक्तित्व से राष्ट्रत्व का विकास है। कोविड के दौरान जिन देशों ने वैक्सीन की मांग की तो लगभग हर देश को भारत ने वैक्सीन उपलब्ध करवाई, ये मानत्व है। जो मेरी तरह नहीं सोचता था उसको जीने का अधिकार नहीं है यह मानत्व का विपरित उदाहरण है। आपका व्यवहार, आचरण आपको मानव, दानव या फिर नारायण बनाता है। व्यक्ति के आंतरिक सोच में तीन महत्वपूर्ण बातें रहती हैं, जिनमें हम अपने बारे में क्या सोचते है, दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते है और हम दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

मंच पर बैठे प्रोफेसर बी.के. कुठियाला सवालों के जवाब देते हुए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हैलो हिसार | 09.07.2023 | -- | -- |

# राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

## हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन हुआ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहें।

मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे है। उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। 3 साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ई.वी. तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स | 08.07.2023 | -- | -- |

# राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

**हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन हुआ।**

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहे।

हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्याख्यान संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला संबोधित करते हुए

मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में बताया कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति को खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बनाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से दानव प्रवृति की ओर बढ़ेंगे अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हिन्दुस्थान समाचार | 08.07.2023 | -- | -- |

## हिसार: राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी: प्रो. बीके कुठियाला

1d · 1 shares

हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

हिसार, 8 जुलाई (हि.स.)। पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला का कहना है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है।

उन्होंने कहा कि हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है। वे शनिवार को एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के तौर पर संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा, तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से दानव प्रवृति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे, इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| नभ छोर | 08.07.2023 | -- | -- |

# भारत का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध : प्रो. कुठियाला

## हकृवि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 08 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बीके कुठियाला उपस्थित रहे। प्रो. कुठियाला ने कहा कि हम कौन है, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे है। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है। उन्होंने बताया कि क्रांतिकारी भगत सिंह जैसे अनेक शहीदों ने शहादत को स्वीकार किया और एक इच्छा व्यक्त की थी कि मैं अगला जन्म भी इसी भारत में लूं। ये व्यक्तित्व से राष्ट्रतत्व का विकास है। इस मौके पर डॉ. मंजू मेहता, डॉ. नीरज कुमार, मोहित कुमार, डॉ. जगबीर सिंह, प्रो. अवनीश वर्मा, ज्ञानचंद बंसल आदि मौजूद थे।